6

औरतों ने स्टे-स्लेवरी, ब्लैक सफ्फरेज और एंटी-लाइनचिंग मुवमेंट में अहम भूमिका निभाई। पर इन मुवमेंट का औरतों के जीवन पर क्या असर पड़ा? — (उन्होंने लोगों के सामने बोलना, राजनैतिक रूप से संगठित होना सीखा)

(3) शोषित औरतें

इस अप्रोच में औरतों के घरेलू शोषण – वाइफ बीटिंग, रैप, पोर्नोग्राफी – "औरतों पर अत्याचार" का अध्ययन किया गया। समाज शास्त्रीयों ने औरतों के आर्थिक और राजनैतिक शोषण के पहलुओं की भी जांच-पड़ताल की। और वाइट मेल के औरतों के रंग के आधार पर शोषण, दास बनाने, राज्य की वेलफेयर पॉलिसी इत्यादि के नाम पर शोषण की जांच की। पर सिर्फ शोषित / पीड़ित औरतों पर बात करने से कोई इस निष्कर्ष पर पहुंच सकता है कि समकालिन संस्कृति सबसे बारबरीक है। औरतें सिर्फ निम्न स्थिति में शोषित ही रही हैं और उन्होंने कभी भी अपनी आवाज़ नहीं उठाई। पर नारीवादी स्कॉलरस कुछ और ही नतीजे पर पहुंचते हैं कि औरतों ने हमेशा पुरूष प्रभुत्व के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई है।

वट इज न्यु इन फैमिनिस्ट एनालिसिस
(नारीवादी विश्लेषण की खासियत)

फैमिनिस्ट रिसर्च के लक्षण जो इसे पारंपरागत रिसर्च से अलग बनाते हैं: —

दर्शन मित्र

5 दर्शन मित्र

पर यह विश्लेषण इन अलग-अलग तरह की औरतों को अपने अध्ययन / शोध में सम्मिलित करने के बाद भी अधूरा ही था।

(1) नारी समाज शास्त्री

अभी तक जिन समाज शास्त्रीयों के काम को सिर्फ स्त्री होने के कारण नकार दिया जाता है, अहम नहीं माना जाता था उसे शामिल किया जाने लगा। पर यह नाकाफी है क्योंकि ~~नारी समाज शास्त्री~~ इन औरतों को समाज शास्त्री बनने के लिए काफी प्रेशर और कन्सट्रेन्स का सामना करना पड़ा होगा जिस वजह से उनके रिसर्च में उन्ही बातों को सम्मिलित किया गया जैसा उनके समय के पुरुष सामाजिक जीवन के बारे में सोचते थे। इसलिए उस तरह की ~~समाज शास्त्री बनने के लिए~~ आवश्यक है

(2) नारी का सामाजिक जनजीवन में योगदान

यह अप्रोच भी पुरुष केंद्रित मूल्यों को स्थानांतरित नहीं कर पाता इसलिए एक अधूरा विश्लेषण सामने रखता है। यह सिर्फ उन योगदानों को सामने रखता है जिन्हें पुरुष सामने रखना चाहते हैं। यह ऐसे प्रश्नों पर ध्यान ही नहीं देता कि औरतों ने औरतों के जन-जीवन के सुधार में क्या योगदान दिया। उदाहरण के तौर पर मार्गेट सेंगर का बर्थ कंट्रोल मुवमेंट युजेनिक पालिसी पर एक महत्वपूर्ण और बदकिस्मत रोल रखता है। औरतें अपनी प्रजनन संबंधित फैसले ले सकती थी। पर यह दूसरे अर्थ को पूरा नहीं कर पाया क्योंकि औरतों के सिर्फ "आदमी की दुनिया" में क्या योगदान है उसीका वर्णन किया गया।

(4)

नारीवादी तर्क करते हैं कि पारंपरिक ज्ञान मीमांसा सिद्धांतों में स्त्री को ज्ञाता की श्रेणी से वंचित रखा गया है। वे क्लेम करते हैं कि सांइस भी मसकुलाइन (masculine) है, इतिहास को भी पुरुष के ही दृष्टिकोण से लिखा गया है; समाज शास्त्र की विषय वस्तु और वाक्यों में कर्ता भी हमेशा पुरुष ही रहता है। नारीवादी ज्ञान मीमांसा के (subject) अल्टरनेटिव सिद्धांत देते हैं जिनमें स्त्री के ज्ञाता होने की संभावना बनती है। ज्ञाना मीमांसा संबंधित मुद्दे निश्चित तौर पर विश्लेषण की प्रक्रिया और किस सिद्धांत का चुनाव किया जाना चाहिए इस बात को प्रभावित करते हैं और साथ ही प्रक्रिया कैसे आगे बढ़ायी जाए इसे भी। इन तीनों के ही बीच संबंध है, पर एक के मुद्दे को दूसरे का मुद्दा समझ लेना गलत होगा।

दर्शन मित्र

प्रॉब्लमस विद एडिंग वुमन (समाज शास्त्रीयों द्वारा अध्ययन में 'स्त्री सम्मिलित करने पर भी कमियाँ)

समाज शास्त्र में पारंपरिक तौर पर विश्लेषण जो पुरुष-केंद्रित था उसको दूर करने के लिए सामाजिक विज्ञान स्त्रियों को भी सम्मिलित करता है वह तीन तरीके की औरतों को अपने विश्लेषण का हिस्सा बनाता है ① नारी-समाज शास्त्री, ② वे औरतें जिन्होंने समाज के लिए कार्य किये और समाज शास्त्री जिनका पहले से ही अध्ययन कर रहे थे ③ वे औरतें जो पुरुष प्रभुत्व का शिकार हुई।

मे वैज्ञानिक कॉनसेप्चुअलाइज करते हैं। वे स्त्री और पुरुषों के व्यवहार का ध्यान से अवलोकन करते हैं जो पारंपरिक सामाजिक वैज्ञानिक महत्वपूर्ण नहीं समझते। नारीवादी ऐतिहासिक रिकार्ड्स के साथ नए पैटर्न्स के उदाहरण भी सम्मिलित करते हैं।

मैथडोलॉजी (सिद्धांत / प्रक्रिया) वह सिद्धांत (theory) और न शोध्य कार्य कैसे किया है और किया जाना चाहिए। विश्लेषण है जिसमें देखा जाता है

मैथडोलॉजी (सिद्धांत / प्रक्रिया) का अर्थ है सिद्धांत या शोध्य कार्य का विश्लेषण कि वह कैसे किया जाता है और किया जाना चाहिए। नारीवादी तर्क देते हैं कि पारंपरिक सिद्धांतों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है जो सामाजिक जीवन में औरतों की भागीदारी और पुरुषों के कार्यों को लैंगिकता समझने में कठिनाई पैदा करते हैं। वो पारंपरिक सिद्धांतों का नारीवादी प्रारूप तैयार करते हैं। इस तरह नारीवादी प्रक्रिया के उदाहरण निम्न चर्चाओं से मिल जाते हैं- कैसे फेनोमनोलॉजीकल एप्रोच को "औरत की दुनिया" समझने के लिए प्रयोग किया जा सकता है या कैसे मार्क्सिस्ट पॉलिटिकल इकानॉमी को औरत के घरेलु या मजदूरी के क्षेत्र में लगातार शोषण के कारण समझने में मदद मिलेगी।

ज्ञानमीमांसा में ज्ञान संबंधी सिद्धांतों की चर्चा की जाती है। ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान के बीच के संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। ज्ञान के समाजशास्त्री ज्ञान मीमांसा को परिकल्पनाओं (beliefs) को प्रमाणित (justify) करने का तरीका मानते हैं।

दर्शन मित्र

समाजशास्त्र शोधकों

इसके बाद वे सामाजिक शास्त्र के इस सोच कि नेडे एंड वुमन (पहिला के सम्पादित) करनी के नारीवादी आलोचना की प्रतिक्रिया कैसे में काफी है का आकलन करती है। और अंत में सैंड्रा इन तीन मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं जिनकी वजह से नारीवादी विश्लेषण एडिशन एप्रोच से आगे चला जाता है। सैंड्रा इसी के साथ यह भी दिखाने की कोशिश करती है कि इन मुद्दों को ही मैथड समझ लेना गलत है, पर इसमें कोई दो राय नहीं कि वे साफ तौर पर शोध प्रविधि का चुनाव करने में मदद करते हैं।

मैथड, मैथडोलॉजी, एपिस्टमोलॉजी (शोध प्रविधि, सिद्धांत / प्रक्रिया ~~[illegible]~~ व ज्ञान मीमांसा)

शोध प्रविधि (मैथड) उन तकनीक या तरीकों को कहते हैं जिनसे तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है यह तीन विभागों में रखा जा सकता है

(1) सूचना देने वाले (जानकारी) को सुनना और प्रश्न करना (listening to or interogating informants)

(2) व्यवहार का अवलोकन ~~[illegible]~~ करना (Observing behaviour)

(3) ऐतिहासिक चिह्नों और रिकॉर्ड्स की छानबीन करना (examining historical traces and records)

सैंड्रा हार्डिंग अपने इस लेख में दिखाती है कि नारीवादी प्रविधि भी इन्हीं से ही होती है पर वे इन प्रविधियों का किस प्रकार प्रयोग करते हैं वह अलग है। उदाहरण के लिए: वह नारी सूचकों को ध्यान से सुनते हैं कि वे अपने और पुरुष के जीवन के बारे में क्या सोचती है; और आलोचनात्मक रूप से कि कैसे पुरुष और स्त्री जीवन के बारे

(1) (Q.1) Is there a feminist Method? — Sandra Harding

method - प्रविधि / प्रणाली (methodology)

(Meaning of title — क्या नारीवादी मैथड (शोध प्रविधि) अन्य शोध मैथड से अलग है?)

सैंड्रा हार्डिंग अपने लेख "इज देयर ए फेमिनिस्ट मैथड?" में यही देखने की कोशिश करती हैं कि नारीवादी शोध प्रविधि (method) और प्रक्रिया (methodology) समाजशास्त्र के शोध मैथड से अलग है या वही है। वह अपने लेख की शुरुआत में कहती हैं कि पिछले दो दशकों से नारीवादियों ने सामाजिक विज्ञान जिस तरीके से स्त्री, पुरुष और सामाजिक जीवन का आकलन करता है उसको मूलभूत चुनौतियां दी हैं। शुरुआत से ही मैथड, मैथडोलॉजी और ज्ञान मीमांसा संबंधी इन चर्चाओं से जुड़े कि किस तरह परंपरागत एनालिसिस के अधूरे या भ्रष्ट विवरण को सुधारा जाए। क्या कोई अलग फेमिनिस्ट मैथड है? कैसे फेमिनिस्ट मैथडोलॉजी परंपरागत मैथडोलॉजी को चुनौती देती है या पूरक रूप में काम करती है? किस आधार पर फेमिनिस्ट सिद्धांतों/धारणाओं और पद्धति की वकालत की जा सकती है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर नारीवादी सिद्धांत और राजनीति में चर्चा का विषय रहे।

सैंड्रा अपना फोकस पहले प्रश्न पर करती हैं और मानती हैं कि कोई अलग फेमिनिस्ट मैथड नहीं है। पर ज्यादातर मैथड, मैथडोलॉजी, ज्ञानमीमांसा के बीच अंतर न समझ पाने के कारण इसे अलग समझ लिया जाता है क्योंकि मैथडोलॉजिकल, एपिस्टमोलोजिकल इश्यूज को मैथड संबंधी इश्यूज समझ लिया जाता है। वह कहती हैं कि यहां प्रश्न यह बनता है कि वह क्या है जिसके कारण नारीवादी जैविक विज्ञान, नारीवादी समाज शास्त्र संबंधी प्रभावशाली शोध को और बल मिला है? वह इस प्रश्न के उत्तर के लिए सबसे पहले मैथड, मैथडोलॉजी, एपिस्टमोलोजी (ज्ञान मीमांसा) के बीच का अंतर स्पष्ट कर इनसे जुड़े मुद्दों की चर्चा करती है।

1 दर्शन मित्र